Class → T.D.C. Part II

Paper → IV (History of Western Philosophy)

Topic → Kant — Space and Time

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
R. N. College, Hajipur

कान्ट — देश एवं काल
(Kant — Space and Time)

प्रत्येक मनुष्य को देश एवं काल का अनुभव होता है। हमारे इन्द्रियानुभव में किसी वस्तु के रंग, गंध, स्वाद आदि का बोध होता है, इसके साथ ही किसी वस्तु को 'कब' और 'कहाँ' देखा गया — ये विचार भी जुड़े रहते हैं। इसी से हमें देश एवं काल का बोध होता है। देश के कारण किसी वस्तु के नजदीक-दूर, ऊपर-नीचे, दायें-बायें या अगल-बगल होने का बोध होता है तथा काल के कारण वस्तु के सम्बन्ध में आगे-बाद या भूत-भविष्य का ज्ञान होता है।

देश एवं काल के विचार को स्पष्ट करना केवल दार्शनिकों की ही समस्या नहीं रही है, बल्कि वैज्ञानिक स्तर पर भी इस सम्बन्ध में अनेक सिद्धान्त दिये गये हैं। कान्ट के पूर्व न्यूटन, गैलेलियो जैसे वैज्ञानिकों ने यह बतलाया है कि ये दोनों मनुष्य से स्वतंत्र वस्तुनिष्ठ सत्ताएँ हैं जिनमें हमारे अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुएँ हैं। किन्तु कान्ट ने इस मत का खण्डन करते हुए कहा है कि हमसे पृथक् देश एवं काल का कोई अस्तित्व बाह्य संसार में नहीं होता है। इसका ज्ञान मनुष्य को अपने ही आत्मिक संसार अर्थात् बुद्धि से प्राप्त होता है।

कान्ट का कहना है कि देश एवं काल हमारे मन के प्रागनुभविक (a priori) आकार हैं। इसी के माध्यम से हमें वस्तुओं की अनुभूति होती है। देश एवं काल की वस्तुनिष्ठ सत्ताएँ नहीं हैं। इसके विरुद्ध उन्होंने तर्क दिये हैं कि ये दोनों अनुभव के पूर्व हमारे अन्दर उपस्थित नहीं रहते हैं, बल्कि अनुभव के आधार पर हम इनकी

धारणाएँ अपने अन्दर बनाते हैं। कान्ट का कहना है कि जब तक निकट-दूर, ऊपर-नीचे, वर्तमान-भूत या भविष्य के विचार हमारे मन में पहले से उपस्थित नहीं होंगे, तब तक वस्तुओं एवं घटनाओं की अनुभूति हमें इन रूपों में कैसे होगी? इससे स्पष्ट है कि अनुभव के द्वारा हमें देश एवं काल का ज्ञान होता है और इसका आधार हमारी संवेदनशक्ति (Sensibility) है।

कान्ट ने देश एवं काल के सम्बन्ध में दूसरा प्रमाण देते हुए कहा है कि वस्तुओं एवं घटनाओं से बिल्कुल रिक्त देश एवं काल की कल्पना हम कर सकते हैं। किन्तु वस्तुओं की कल्पना देश एवं काल से विहीन रूप में नहीं की जा सकती। वस्तुओं एवं घटनाओं को हम सदैव देश एवं काल की सम्बन्धों में ही बँधा देखते हैं। इसलिए देश एवं काल अनुभवाश्रित न होकर प्राग्नुभविक रूप में हमारे मन में उपस्थित होते हैं।

कान्ट ने देश एवं काल को सामान्य अवधारणा (General concept) न मानकर इसे विशेष (Particular) कहा है। इसीलिए कान्ट इन्हें a priori percepts कहते हैं। इसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष से है। यदि देश एवं काल के पृथक्-पृथक् रूपों को जोड़ दिया जावे, तो उससे सम्पूर्ण देश एवं सम्पूर्ण काल का निर्माण हो जाता है। इससे स्पष्ट है कि देश एवं काल सामान्य अवधारणाएँ न होकर 'विशेष' है। जिन्हें हम अलग-अलग देश समझते हैं, वह वस्तुतः एक या इकाई स्वरूप है। इसीप्रकार काल अनन्त एवं असीम है। जिन्हें हम वर्ष, माह, दिन आदि कहते हैं, वे काल के विविध भाग हैं। मूलतः काल इकाई स्वरूप है।

कान्ट देश को बाह्य इन्द्रिय का रूप (Form of external sense) कहते हैं क्योंकि यह बाह्य वस्तुओं के प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है तथा काल को अन्तःइन्द्रिय का रूप (Form of internal sense) कहते हैं क्योंकि यह हमारी चेतना के प्रवाह का प्रत्यक्षीकरण है। उनका कहना है कि वस्तु के अर्थात् स्वरूप को अर्थात् देश एवं काल की सीमा से मुक्त रूप को हम

कभी नहीं जान पाते, इसलिए पदार्थ का वास्तविक रूप हमारे लिए 'अज्ञेय' है। जिस संसार का हमें ज्ञान होता है, वह देश एवं काल की सीमा से बँधा हुआ प्रपंचात्मक संसार (Phenomenal World) है। प्रो० जोड ने कान्ट के देश एवं काल की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए कहा है कि ये दोनों रंगीन चश्मे की तरह हैं, जो जन्म से ही हमारी बुद्धि में चढ़ी हुई हैं। इसलिए प्रत्येक वस्तु को रंगीन चश्मे से देखने के लिए हम बाध्य हैं और हमें प्रत्येक वस्तु अपने मूल रूप में न दीख कर रंगीन ही दिखलायी पड़ती है।

समीक्षा – कान्ट के इस सिद्धान्त में अनेक दोष हैं—

(i) सर्वप्रथम यह व्यावहारिक समस्या है कि जिस देश एवं काल में स्वयं को हम घूमते-फिरते या काम करते पाते हैं, उसे कैसे अपने मन का आकार मान लिया जाये? हमें देश एवं काल की वस्तुनिष्ठ अनुभूति होती है।

(ii) रसेल ने एक महत्वपूर्ण दोष का उल्लेख करते हुए कहा है कि यदि देश एवं काल मन के आकार हैं, तो बुद्ध दैशिक सम्बन्धों को हम सदैव एक जैसा कैसे अनुभव करते हैं। जैसे— नाक दोनों आँखों के मध्य स्थित है, शरीर के अन्य अंग भी एक निश्चित दैशिक सम्बन्ध से बँधे हैं, आदि।

इससे स्पष्ट है कि कान्ट का यह सिद्धान्त देश एवं काल की पूर्ण रूप से व्याख्या नहीं कर पाता। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान में देश एवं काल को द्रष्टा के सापेक्ष, उसकी गति आदि के सापेक्षिक माना गया है।

———X———X———